बिज़नेस स्टैंडर्ड

जीडीपी में 5.4 फीसदी वृद्धि

तीसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि उम्मीद से कम, पूरे वित्त वर्ष के लिए वृद्धि अनुमान घटाया

असित रंजन मिश्रा
नई दिल्ली, 28 फरवरी

देश की अर्थव्यवस्था चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में 5.4 फीसदी की दर से बढ़ी, जो अधिकतर अर्थशास्त्रियों के अनुमान से कम है। सांख्यिकी कार्यालय ने वित्त वर्ष 2022 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि का अनुमान घटाकर 8.9 फीसदी कर दिया है जबकि जनवरी में 9.2 फीसदी वृद्धि का अनुमान लगाया गया था। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना महामारी की तीसरी लहर के प्रतिकूल प्रभाव का असर चौथी तिमाही में भी दिखेगा और रूस तथा यूक्रेन युद्ध के कारण जिंसों के दाम में तेजी से पूरे वित्त वर्ष के दौरान वृद्धि पर दबाव देखा जा सकता है।

सांख्यिकी कार्यालय की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में सेवा क्षेत्र में 8.2 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई। इसी तरह सेमीकंडक्टर की कमी के कारण विनिर्माण क्षेत्र लगभग स्थिर रहा और श्रम आधारित निर्माण क्षेत्र के प्रदर्शन में इस दौरान 2.8 फीसदी की गिरावट आई है। इससे संकेत मिलता है कि अर्थव्यवस्था में अभी मजबूत सुधार नहीं हुआ है। ब्रिकवर्क रेटिंग्स में मुख्य आर्थिक सलाहकार गोविंद राव ने कहा कि पूरे वित्त वर्ष में 8.9 फीसदी वृद्धि हासिल करने के लिए चालू वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में 4.8 फीसदी वृद्धि दर होना चाहिए। उन्होंने कहा, 'यह थोड़ा चुनौतीपूर्ण दिखता है क्योंकि महामारी की तीसरी लहर से आर्थिक गतिविधियां प्रभावित हुई हैं। इसके साथ ही भू-राजनीतिक तनाव, आपूर्ति में बाधा, कोयला, बिजली तथा सेमीकंडक्टर की किल्लत भी बनी हुई है। ऐसे में पूरे वित्त वर्ष के वृद्धि अनुमान में और कमी की जा सकती है।' डेलॉयट इंडिया की अर्थशास्त्री रुमकी मजूमदार ने कहा कि आपूर्ति पक्ष पर दबाव और कमजोर मांग के कारण तीसरी तिमाही में वृद्धि नरम रही। उन्होंने कहा कि वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव आगे वृद्धि के परिदृश्य को प्रभावित कर सकता है। सबसे बड़ी चिंता मुद्रास्फीति बढ़ने को लेकर है। (संबंधित खबर पृष्ठ 4)

- वित्त वर्ष 2022 में जीडीपी वृद्धि 8.9 फीसदी रहने की उम्मीद, पहले 9.2 फीसदी था अनुमान
- महामारी की तीसरी लहर और रूस-यूक्रेन संकट का विकास दर पर पड़ेगा असर
- विनिर्माण क्षेत्र में मामूली वृद्धि और निर्माण क्षेत्र में गिरावट का दिखा असर
- अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में सेवा क्षेत्र में 8.2 फीसदी वृद्धि दर्ज की गई

जनवरी में प्रमुख क्षेत्र की वृद्धि घटी

इंदिवजल धस्माना
नई दिल्ली, 28 फरवरी

जनवरी में 8 उद्योग वाले प्रमुख क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर 3.7 प्रतिशत रह गई, जो इसके पहले महीने में 4.1 प्रतिशत थी। इससे ओमीक्रोन के कारण कुछ क्षेत्रों में हुए लॉकडाउन के मामूली असर का पता चलता है।

इसके बावजूद पिछले साल के अनुकूल आधार के असर के कारण जनवरी में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में बढ़ोतरी की संभावना है, जिसमें दिसंबर में महज 0.4 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई थी। आईआईपी में प्रमुख क्षेत्र का अधिभार 40 प्रतिशत से ज्यादा है।

इसका मतलब यह है कि औद्योगिक क्षेत्र कोविड की तीसरी लहर के किसी बड़े असर से बच सकता है, जो पहले की दो लहर की तुलना में कमजोर था।

इक्रा में मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा, 'औद्योगिक क्षेत्र तीसरी लहर से तुलनात्मक रूप से बचा हुआ नजर आ रहा है और प्रमुख क्षेत्र की वृद्धि में सालाना आधार पर मामूली कमी आई है। साथ ही रोजाना के जीएसटी ई-वे बिल के सृजन में भी बहुत मामूली कमी आई है।'

इस साल जनवरी में 6.88 करोड़ ई-वे बिल का सृजन हुआ है, जबकि इसके पहले महीने में 7.16 करोड़ ई-वे बिल बनाए गए थे।

चालू वित्त वर्ष के पहले 10 महीनों में कम आधार के कारण प्रमुख क्षेत्र में 11.5 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज की गई है, जबकि पिछले साल की समान अवधि में 8.6 प्रतिशत संकुचन आया था।

बैंक आफ बड़ौदा के मुख्य अर्थशास्त्री मदन सबनवीस ने कहा, 'उर्वरक का उत्पादन कम है, जिसकी वजह फसल बुआई के मौसम खत्म होना है।' रबी सीजन की बुआई जनवरी में खत्म हो जाती है।

उन्होंने आईआईपी को लेकर बहुत ज्यादा उम्मीद जताते हुए कहा कि आईआईपी वृद्धि करीब 3 प्रतिशत रहने की संभावना है क्योंकि आधार के असर के साथ उपभोक्ता वस्तुओं में तेजी का रुख है।

कोविड का असर

- कोविड-3 के असर के कारण दिसंबर के 4.1 प्रतिशत की तुलना में जनवरी में वृद्धि घटकर 3.7 प्रतिशत
- आधार के असर के कारण आईआईपी की वृद्धि दर रह सकती है बेहतर